(16)

आनन्द लोके

आनन्द लोके, मंगला लोके,
बिराजो सत्य सुन्दर
महिमा तव उद्भाषित महा गगन मांझे।
विश्व जगत महिभूषण वेष्ठित चरणे।।
ग्रह तारक चन्द्र तपन व्याकुल द्रुत वेगे
करिछे पान, करिछे स्नान, अक्षय किरणे।।

আনন্দ লোকে, মঙ্গলা লোকে,

বিরাজ সত্য সুন্দর

মহিমা তব উদ্ভাষিত মহা গগন মাঝে।

বিশ্ব জগত মহিভূষণ বেষ্টিত চরণে।

গ্রহ তারক চন্দ্র তপন ব্যাকুল দ্রুত বেগে

করিছে পান, করিছে স্নান, অক্ষয় কিরণে।।